Makke Ki Ziyaraat
Amire Ahle Sunnat Ke Saath (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 339
Weekly Booklet : 339

मक्के की ज़ियारात

अमीरे अहले सुन्नत के साथ

(अमीरे अहले सुन्नत का उ़म्रह 2023 ई. मअ़ तहरीरात) सफ़हात 30

ठंडी ठंडी हवा अ़रब की है
ख़ूब रहमत बरसती रब की है

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी)

मदीना न देखा तो कुछ भी न देखा

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब कोई मुसल्मान ज़ियारत की निय्यत से मदीनतुल मुनव्वरह आता है तो फ़िरिश्ते रह़मत के तोह़फ़ों से उस का इस्तिक़्बाल करते हैं। (جذب القلوب، ص211)

अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का उ़म्रह मअ़ मदीनए पाक की ह़ाज़िरी (2022) रिसाले के बा'द इस साल (2023) में अमीरे अहले सुन्नत के सफ़रे मदीना पर तह़रीरी रिसाला बनाम **"मक्के की ज़ियारात अमीरे अहले सुन्नत के साथ"** आप के हाथों में मौजूद है। मुख़्तलिफ़ वीडियोज़ वग़ैरा से ह़ासिल की गई मा'लूमात की रोशनी में येह सफ़र नामा तय्यार किया गया है नीज़ मौक़अ़ की मुनासबत से अमीरे अहले सुन्नत की ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल के नाम लिखी गई तह़रीरात का अ़क्स भी पेश किया जा रहा है, **अल्लाह** पाक ने चाहा तो इन का बग़ौर मुत़ालआ़ उन यादगार लम्ह़ात की पुरकैफ़ यादों की अ़क्कासी करेगा। **अल्लाह** करीम हमें अमीरे अहले सुन्नत के इ़श्क़े मक्का व मदीना का सदक़ा नसीब करे और बार बार ह़ज्जो ज़ियारते मदीना से नवाज़े। काश ! हर साल अमीरे अहले सुन्नत के साथ ह़रमैने त़य्यिबैन की ह़ाज़िरी की ख़ैरो आ़फ़ियत से सआ़दत मिले। اٰمین بجاہ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہ علیہ واٰلہ وسلّم

बस उन के जल्वों में आ जाए फिर क़ज़ा या रब
दिखा दे एक झलक सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की
इसी में उ़म्र गुज़र जाए या ख़ुदा या रब
मदीने जाएं फिर आएं दोबारा फिर जाएं

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बा : हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मक्के की ज़ियारात अमीरे अहले सुन्नत के साथ (दिसम्बर 2023)

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या अल्लाह पाक ! जो कोई 30 सफ़्हात का रिसाला : **"मक्के की ज़ियारात अमीरे अहले सुन्नत के साथ"** पढ़ या सुन ले उसे बार बार मक्का व मदीना की ज़ियारत नसीब कर और उसे ह़ज्जे मक़्बूल नसीब कर के बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला अ़ता फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुआ क़बूल होती है (दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत)

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** तमाम दुआएं पर्दे में होती हैं यहां तक कि उन के शुरूअ़ में **अल्लाह** पाक की ह़म्द (या'नी ता'रीफ़ बयान) की जाए और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजा जाए फिर दुआ की जाए तो दुआ करने वाले की दुआ क़बूल की जाती है। (القول البدیع، ص222)

है सब दुआओं से बढ़ कर दुआ दुरूदो सलाम कि दफ़्अ़ करता है हर इक बला दुरूदो सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मक्के से यमन

मक्कए पाक में अ़ब्दुर्रह़ीम या अ़ब्दुर्रह़मान नामी एक नेक शख़्स रहता था जो हर वक़्त **अल्लाह** पाक की इ़बादत करता रहता था। अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये उस से मह़ब्बत फ़रमाते। उस ने मक्कए पाक से यमन चले जाने का इरादा किया तो ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को इस बात की ख़बर पहुंची तो आप ने उसे मक्कए पाक ही में रहने की तरग़ीब दिलाते हुए एक ख़त लिखा जिस में क़ुरआनी

आयात व अहादीसे मुबारका की रोशनी में मक्कए पाक के फ़ज़ाइल का बयान था।[1] (उस ख़त का कुछ हिस्सा ख़ुलासतन पेश किया जाता है।)

हज़रते इमाम हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ख़त

हज़रते इमाम हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم, ऐ भाई ! **अल्लाह** पाक आप की हिफ़ाज़त फ़रमाए, आप को हर ना पसन्दीदा चीज़ से महफ़ूज़ फ़रमा कर मज़ीद नेक कामों की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और अपनी रहमत से हमें जन्नत में जम्अ फ़रमाए।

ऐ मेरे भाई ! **अल्लाह** पाक आप को लम्बी उम्र इनायत फ़रमाए, मुझे ख़बर पहुंची कि आप अम्न की जगह हरम शरीफ़ से यमन जाने का इरादा रखते हैं, ख़ुदा की क़सम ! मुझे इस ख़बर से बहुत ग़म हुवा।

मुझे आप की सोच पर तअज्जुब है कि **अल्लाह** पाक ने आप को मक्कए पाक में रहने की सआदत बख़्शी मगर आप यहां से जाने का इरादा कर रहे हैं हालां कि आप को तो **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा करना चाहिये कि उस ने आप को अपने अम्न वाले हरम में जगह अता फ़रमाई।

ऐ मेरे भाई ! आप दुन्या की शरफ़ो अज़मत के ए'तिबार से बेहतरीन और **अल्लाह** पाक की पसन्दीदा ज़मीन पर हैं लिहाज़ा यहां से जाने के बारे में न ख़याल करें। **अल्लाह** पाक हमें और आप को अच्छे आ'माल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (फ़ज़ाइले मक्का, स. 12 माख़ूज़न)

1... मक्कए पाक या मदीना शरीफ़ में मुस्तक़िल रिहाइश इख़्तियार करने के बारे में अहम मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत की किताब "आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात" सफ़हा 196 पढ़िये, येह किताब दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से मुफ़्त डाउनलोड की जा सकती है।

तेरे घर के फेरे लगाता रहूं मैं
सदा शहरे मक्का में आता रहूं मैं
मैं लेता रहूं बोसए संगे अस्वद
यूं दिल की सियाही मिटाता रहूं मैं
इलाही मैं फिरता रहूं गिर्दे का'बा
यूं क़िस्मत की गर्दिश मिटाता रहूं मैं
लिपट कर गले लग के मैं मुल्तज़म से
गुनाहों के धब्बे मिटाता रहूं मैं
हतीमे हरम में नमाज़ों को पढ़ कर
तेरे दर पे दुखड़े सुनाता रहूं मैं
मैं पीता रहूं हर घड़ी आबे ज़मज़म
लगी अपने दिल की बुझाता रहूं मैं
सफ़ा और मर्वह के माबैन दौड़ूं
सई कर के तुझ को मनाता रहूं मैं

तू शर से पनाह दे मुक़द्दर हो ऐसा
कि बस ख़ैर ही ख़ैर पाता रहूं मैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत की उ़म्रह शरीफ़ के लिये रवानगी

शुक्रे ख़ुदा कि आज घड़ी उस सफ़र की है जिस पर निसार जान फ़लाहो ज़फ़र की है

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! 18 जुमादल ऊला 1445 हिजरी, 3 दिसम्बर 2023 बरोज़ पीर शरीफ़ अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه, ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी دام ظلہ और ह़ाजी अ़ली रज़ा अ़त्तारी मअ़ अपने नन्हे मुन्ने साह़िब ज़ादे ह़सन रज़ा अ़त्तारी سَلَّمَهُ الْبَارِی मुख़्तसर से क़ाफ़िले की सूरत में उ़म्रे के लिये रवाना हुए। रवानगी से पहले रिक़्क़त अंगेज़ कैफ़िय्यत में अमीरे अहले सुन्नत ने कुछ इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया :

ह़ाजी इमरान हमारे इस मदनी क़ाफ़िले के अमीर हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं "रफ़ीकुल ह़रमैन" से सफ़रे मदीना के लिये निय्यतें कर चुका हूं, अब हम एरपोर्ट की त़रफ़ जाएंगे, घर से निकलते वक़्त येह अश्आ़र लबों पर जारी थे :

मुद्दआ़ ज़ीस्त का मैं ने पाया रह़मते ह़क़ ने किया फिर साया
मेरे आक़ा ने करम फ़रमाया फिर मदीने का बुलावा आया
पहले कुछ अश्क बहा लूं तो चलूं इक नई ना'त सुना लूं तो चलूं

سیدی انت حبیبی

शुक्र में सर को झुकाने के लिये दाग़ ह़सरत के मिटाने के लिये
बख़्ते ख़्वाबीदा जगाने के लिये उन के दरबार में जाने के लिये
अपनी अवक़ात बना लूं तो चलूं इक नई ना'त सुना लूं तो चलूं

سیدی انت حبیبی

सामने हो जो दरे लुत्फ़ो करम यूं करूं अ़र्ज़ कि या शाहे उमम
आ गया आप का मोह़ताजे करम इस गुनहगार का रखियेगा भरम
शौक़ को अ़र्ज़ बना लूं तो चलूं इक नई ना'त सुना लूं तो चलूं

سیدی انت حبیبی

एरपोर्ट की त़रफ़ रवानगी में अश्आ़र और ज़ौक़ भरी कैफ़िय्यात

अमीरे अहले सुन्नत अ़रब अमारात (दुबई) से ह़िजाज़े मुक़द्दस के लिये एरपोर्ट जाते हुए गाड़ी में आंखें बन्द किये येह अश्आ़र पढ़ रहे थे :

अरे ज़ाइरे मदीना तू ख़ुशी से हंस रहा है दिले ग़मज़दा जो पाता तो कुछ और बात होती
ग़मे रोज़गार में तो मेरे अश्क बह रहे हैं तेरा ग़म अगर रुलाता तो कुछ और बात होती
मैं जो यूं मदीने जाता तो कुछ और बात होती कभी लौट कर न आता तो कुछ और बात होती

(वसाइले बख़्शिश, स. 384, 385)

गाड़ी में ना'त गो शाइर सय्यिद इक़्बाल अ़ज़ीम साहिब का कलाम

सफ़रे मदीना की ज़ौक़ अफ़्ज़ा घड़ी हो तो ख़ुशी भी ख़ुशी से झूम उठती है। अमीरे अहले सुन्नत गाड़ी में बड़े ज़ौक़ो शौक़ से आंखें बन्द किये मुख़्तलिफ़ अश्आ़र पढ़ रहे थे, इस दौरान आप ने नाबीना ना'त गो शाइर सय्यिद इक़्बाल अ़ज़ीम साहिब के म़श्हूरे ज़माना कलाम के कई अश्आ़र पढ़े। इसी कैफ़िय्यत में सारा सफ़र त़ै हो गया।

मदीने का सफ़र है और मैं नमदीदा नमदीदा
जबीं अफ़्सुर्दा अफ़्सुर्दा क़दम लग़ज़ीदा लग़ज़ीदा
चला हूं एक मुजरिम की त़रह़ मैं जानिबे त़यबा
नज़र शरमिन्दा शरमिन्दा बदन लरज़ीदा लरज़ीदा
किसी के हाथ ने मुझ को सहारा दे दिया वरना
कहां मैं और कहां येह रास्ते पेचीदा पेचीदा
मदीने जा के हम समझे तक़द्दुस किस को कहते हैं
हवा पाकीज़ा पाकीज़ा फ़ज़ा सन्जीदा सन्जीदा
बसारत खो गई लेकिन बसीरत तो सलामत है
मदीना हम ने देखा है मगर नादीदा नादीदा
वोही इक़्बाल जिस को नाज़ था कल ख़ुश मिज़ाजी पर
फ़िराक़े त़यबा में रहता है अब रन्जीदा रन्जीदा

एरपोर्ट की त़रफ़ रवानगी और दुआए अ़त्तार

गुज़श्ता साल के सफ़र की त़रह़ इस साल भी अमीरे अहले सुन्नत की दुआ़ओं में ज़ो'फ़ो नक़ाहत (या'नी कमज़ोरी) के सबब व्हील चेर (Wheelchair) पर त़वाफ़ की बजाए पैदल त़वाफ़ करने की दुआ़ शामिल थी जो आप दौराने सफ़र वक़्तन फ़ वक़्तन मांगते रहे। घर से एरपोर्ट जाते हुए आप बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते हैं : **या अल्लाह** पाक! तेरे घर का जब भी त़वाफ़ करूं, पैदल करूं, व्हील चेर या सुवारी पर नहीं बल्कि तेरी दी हुई त़ाक़त से तेरी रिज़ा के लिये अपने पाउं पर चल कर त़वाफ़ करूं।

हर बरस काश ! आ के मक्के में लुत्फ़ उठाऊं त़वाफ़ का या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 81)

एह़राम की निय्यत

ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत इम्साल (या'नी इस साल) भी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से पहले अ़रब शरीफ़ मअ़ फ़ेमिली ह़ाज़िर हो चुके थे, जद्दा शरीफ़ में कुछ आराम व त़आ़म के बा'द अमीरे अहले सुन्नत ने एह़राम पहन कर ख़ुश्बू लगा कर एह़राम के नफ़्ल पढ़े, अब उ़म्रे की निय्यत का वक़्त है, आप ने सब को उ़म्रे की निय्यत करवाई।[1]

ज़मज़म शरीफ़ और दुआ़ए अमीरे अहले सुन्नत

अमीरे अहले सुन्नत जिस मकान में ठहरे हुए थे वहां एह़राम बांधने और एह़राम के नफ़्ल अदा करने के बा'द आप ने उ़म्रे की निय्यत की और खड़े हो कर क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ कर के ज़मज़म शरीफ़ पिया फिर येह ह़दीसे पाक बयान की : येह ज़मज़म शरीफ़ जिस (मुराद के ह़ासिल करने की) निय्यत से पिया जाएगा उसी के लिये है। (ابن ماجہ، 3/490، حدیث:3062) (ज़मज़म शरीफ़ पीने के बा'द आप ने कुछ इस त़रह़ दुआ़ मांगी :) या रब्बे मुस्त़फ़ा جَلَّ جَلَالُہٗ وَصَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! करम कर दे, बे ह़िसाब बख़्श दे, मेरे मां बाप को, मेरे बाल बच्चों को, हमारे सारे ख़ानदान को बख़्श दे, हर दा'वते इस्लामी वाले और वाली की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत कर दे। सारी उम्मत की बख़्शिश फ़रमा दे।

जब कमरे से बाहर तशरीफ़ लाए तो रोते रोते चलते हुए येह दुआ़ ज़बान पर जारी थी। **इलाहल आ़लमीन !** हम ह़रम की त़रफ़ चल पड़े हैं, रह़मत की नज़र फ़रमा ! **या अल्लाह** पाक ! हमारा चलना आसान, पहुंचना आसान फ़रमा और इसे क़बूल भी फ़रमा। बस रह़मत, रह़मत, रह़मत कर दे। फिर बड़े पुरज़ौक़ अन्दाज़ में झूमते हुए येह अश्आ़र पढ़ते हुए सूए ह़रम बढ़े :

चला हूं एक मुजरिम की त़रह़ मैं जानिबे का'बा नज़र शरमिन्दा शरमिन्दा, बदन लरज़ीदा लरज़ीदा

1 ... अगर निय्यत ही जद्दा शरीफ़ जाने की है तो अब एह़राम की ह़ाजत नहीं। (रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 325)

हुदूदे हरम में दाख़िला

दौराने सफ़र विर्दे लब तल्बिया "لَبَّیْكَ، اَللّٰهُمَّ لَبَّیْكَ، لَبَّیْكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ لَبَّیْكَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَ الْمُلْكَ، لَا شَرِیْكَ لَكَ۔" जारी है। जब गाड़ी हुदूदे हरम के क़रीब पहुंची और कुछ ही फ़ासिले से उस की अ़लामात नज़र आने लगीं तो आप ने अपने साथ मौजूद शुरका को फ़रमाया : येह सामने मेनरोड पर जो गोल मेहराबें नज़र आ रही हैं इस के अन्दर दाख़िल होने से हरम में दाख़िला हो जाएगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِیْم अन्क़रीब हम हरम में दाख़िल होंगे, **अल्लाह** करीम अपनी रह़मत से ईमानो आ़फ़ियत के साथ दाख़िला इनायत फ़रमाए। (आमीन)

ठन्डी ठन्डी हवा हरम की है बारिश अल्लाह के करम की है

अमीरे अहले सुन्नत ने हुदूदे हरम में दाख़िल हो कर अपने साथ मौजूद इस्लामी भाइयों को येह दुआ पढ़ाई : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِّیْ قَرَارًا وَّ ارْزُقْنِیْ فِیْهَا رِزْقًا حَلَالًا ط **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** पाक! मुझे इस में क़रार और रिज़्क़े ह़लाल अ़ता फ़रमा।

(रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 90)

मैं मक्के में फिर आ गया या इलाही करम का तेरे शुक्रिया या इलाही

त़वाफ़ व सई

का'बतुल्लाहिल मुशर्रफ़ा का त़वाफ़ और सई करते हुए मुख़्तलिफ़ दुआ़इया अश्आ़र ज़बान पर जारी थे और वक़्तन फ़ वक़्तन आंखों से सैले अश्क रवां (या'नी आंसू जारी) थे.....

ह़ल्क़ या तक़्सीर[1]

अमीरे अहले सुन्नत ने 19 जुमादल ऊला 1445 हिजरी, 4 दिसम्बर

1... इस्लामी भाई ह़ल्क़ करें या'नी तमाम सर के बाल मुंडवा दें या तक़्सीर करें या'नी कम अज़ कम चौथाई (1/4) सर के बाल उंगली के पोरे के बराबर कटवाएं। इस्लामी बहनें सिर्फ़ तक़्सीर करवाएं।

(रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 196, 197)

2023 को उ़म्रह शरीफ़ मुकम्मल करने के बा'द ह़ल्क़ की सुन्नत अदा करते हुए कुछ इस त़रह़ शुक्रे इलाही अदा किया : اَلْحَمْدُلِلّٰه! **अल्लाह** पाक का बड़ा करम हुवा कि बिग़ैर व्हील चेर के पाउं पर चल कर त़वाफ़ व सई की सआ़दत मिली। **अल्लाह** का जितना एह़सान माना जाए कम है।

मदनी फूल : ह़ल्क़ करवाने में ज़ियादा सवाब है क्यूं कि ह़ल्क़ करवाने वालों के लिये सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 3 बार रह़मत की दुआ़ फ़रमाई है, अलबत्ता क़स्र भी हो सकता है इस के लिये सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार "**रह़मत की दुआ़**" फ़रमाई है। (بخاری، 1/574، حدیث:1728 ماخوذاً)

जन्नतुल मअ़ला

अमीरे अहले सुन्नत उ़म्रह शरीफ़ की अदाएगी के बा'द मक्कए पाक में क़ियाम के दौरान कुछ मुक़द्दस मक़ामात की ज़ियारात के लिये ह़ाज़िर हुए, उन में से एक यादगार ज़ियारत गाह जन्नतुल मअ़ला शरीफ़ है। आइये ! अमीरे अहले सुन्नत ने किस त़रह़ इस मुबारक क़ब्रिस्तान का तआ़रुफ़ करवाया वोह पढ़ते हैं :

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मक्कए मुकर्रमा की प्यारी प्यारी सुब्ह़ बहारें लुटा रही है और हम मक्कए पाक के सब से मश्हूर क़ब्रिस्तान "**जन्नतुल मअ़ला**" में ह़ाज़िर हैं। इस मुबारक क़ब्रिस्तान का पुराना नाम "**मक़ाबिरे ह़जून**" और मश्हूर नाम "**जन्नतुल मअ़ला**" है। इस क़ब्रिस्तान में तमाम मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا, सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا और कई सह़ाबा व ताबिईन व तब्ए़ ताबिईन और औलियाए कामिलीन आराम फ़रमा हैं। **अल्लाह** पाक इन के सदके़ में हम सब को बे ह़िसाब बख़्शे और इन के फ़ुयूज़ो बरकात से हम सब को मालामाल करे। हम नेक परहेज़ गार, आ़शिक़े रसूल, आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत बन जाएं और सारी उम्मत बख़्शी जाए। اٰمِین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अन्दर न जाएं

जन्नतुल मअ़ला शरीफ़ में मौजूद मज़ारात के अब कुब्बे (या'नी गुम्बद) वग़ैरा शहीद कर दिये गए हैं, मज़ारात शहीद कर के उन पर रास्ते निकाले गए हैं लिहाज़ा बाहर रह कर दूर ही से इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ ط نَسْئَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ

तरजमा : सलाम हो आप पर ऐ क़ब्रों में रहने वाले मोमिनो और मुसल्मानो ! और हम भी اِنْ شَآءَ اللّٰه आप से मिलने वाले हैं, हम **अल्लाह** पाक से आप की और अपनी आ़फ़िय़त के त़ालिब हैं।

मस्जिदे जिन्न

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस वक़्त हम मक्कए मुकर्रमा के मश्हूर क़ब्रिस्तान **''जन्नतुल मअ़ला''** के क़रीब वाक़ेअ़ **''मस्जिदे जिन्न''** के साए में ह़ाज़िर हैं। येह वोह तारीख़ी मस्जिद है जहां सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नमाज़े फ़ज्र में क़ुरआने करीम की तिलावत सुन कर कुछ जिन्नात मुसल्मान हुए थे।

(आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 230)

बूढ़ा जिन्न

ह़ज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने एक **बूढ़े जिन्न** को देखा जो एक क़ीमती ख़ूब सूरत जुब्बा पहने बैतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ रहा है, उस के सलाम फेरने पर उन्हों ने उसे सलाम किया, बूढ़े जिन्न ने सलाम का जवाब दिया और कहा : आप इस जुब्बे पर तअ़ज्जुब कर रहे हैं, येह जुब्बा 700 बरस से मेरे पास है, मैं ने इसी जुब्बे में ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का दीदार किया है, इसी में प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी

मुस्त़फ़ा मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत पाई है। और मज़ीद सुनिये ! मैं उन्हीं जिन्नात में से हूं जिन के बारे में **सूरतुल जिन्न** नाज़िल हुई है। (صفۃ الصفوہ، 4/357، بلد الامین، ص128)

मस्जिदुर्रायह

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस वक़्त हम मक्कए मुकर्रमा की मश्हूर **''मस्जिदे जिन्न''** के क़रीब ही सीधे हाथ की त़रफ़ वाक़ेअ़ **''मस्जिदुर्रायह''** की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो रहे हैं। **अल्लाहु अक्बर !** रह़मतों का नुज़ूल हो रहा है। अ़रबी में ''रायह'' झन्डे को कहते हैं और फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर मेरे प्यारे प्यारे आक़ा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सरकारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना मुबारक झन्डा यहां गाड़ा था, سُبْحٰنَ الله। (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 231)

दुआ़ क़बूल होने का मक़ाम

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जहां जहां तशरीफ़ लाए हैं वहां दुआ़ क़बूल होती है, जैसा कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तमाम मशाहदे मुतबर्रका पर दुआ़ क़बूल होती है। (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 136 ब तग़य्युर)

''मशाहद'' मश्हद की जम्अ़ है जिस के मा'ना **''ह़ाज़िर होने की जगह''** के हैं। (या'नी वोह तमाम मक़ामात जहां हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ाहिरी ह़याते मुबारका में तशरीफ़ ले गए हैं।)

दुआ़ए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मस्जिदुर्रायह पर जामेअ़ दुआ़

मस्जिदुर्रायह के मुबारक मक़ाम पर अमीरे अहले सुन्नत ने ह़दीसे पाक

में बयान की गई जामेअ़ दुआ़ मांगी, जामेअ़ दुआ़ वोह कहलाती है जिस के अल्फ़ाज़ थोड़े हों, मआ़नी ज़ियादा। (मिरआतुल मनाजीह, 3/299)

वोह दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हमें दुन्या में भलाई अ़ता फ़रमा और आख़िरत में भलाई अ़ता फ़रमा और हमें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा।

ख़ादिमे नबी, ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर येह दुआ़ मांगा करते थे : اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ (بخاری، 4/214، حدیث:6389)

इश्क़े रज़ा के जल्वे

अमीरे अहले सुन्नत ने गाड़ी में जाते हुए आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का येह शे'र पढ़ कर इस की तश्रीह़ फ़रमाई :

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वोह आग लगाई है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 194)

शर्ह़े कलामे रज़ा : आ़शिक़े माहे रिसालत आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ कह रहे हैं : "ऐ इ़श्क़! मैं तुझ पर क़ुरबान हो जाऊं तू भी क्या ने'मत है, तेरे अन्दर भी एक आग (या'नी सोज़) और एक त़रह़ की जलन है, इ़श्क़ की आग जहन्नम की आग को बुझा देती है।"

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा रो रो के मुस्त़फ़ा ने दरिया बहा दिये हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 102)

मस्जिदे ख़ैफ़ शरीफ़ और 70 अम्बियाए किराम

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस वक़्त हम मिना की ह़सीन वादी में ह़ाज़िरी से मुशर्रफ़ हैं, मिना के ख़ैमों का रूह़ परवर मन्ज़र और मश्हूर मस्जिद "**मस्जिदे ख़ैफ़**" अपने जल्वे लुटा रही है, येह वोह मुबारक मस्जिद है जिस में 70 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के मज़ारात हैं। (معجم کبیر، 12/316، حدیث:13525)

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَنْبِيَآءَ اللّٰه وَرَحْمَةُ اللّٰه وَبَرَكَاتُهٗ

या अल्लाह पाक! मिना शरीफ़, मस्जिदे ख़ैफ़ शरीफ़ और इस में आराम फ़रमा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और इन के भी आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हमें ह़ज नसीब फ़रमा और मिना शरीफ़ की उन दिनों (या'नी ह़ज के दिनों) की ह़ाज़िरियों से भी मुशर्रफ़ फ़रमा और हमारे मां बाप बख़्शे जाएं, सारी उम्मत की मग़्फ़िरत हो। फ़िलिस्त़ीन के मज़्लूम मुसल्मानों की ग़ैब से मदद फ़रमा। **या अल्लाह** पाक! इन पर रह़मत कर दे, इन पर रह़मत कर दे, इन पर रह़मत कर दे। اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

बड़ा ह़ज पे आने को जी चाहता है बुलावा अब आएगा कब या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

70 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का मक़ाम

ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां नमाज़ अदा फ़रमाई है। मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : صَلّٰى فِيْ مَسْجِدِ الْخَيْفِ سَبْعُوْنَ نَبِيًّا या'नी मस्जिदे ख़ैफ़ में 70 अम्बिया (عَلَيْهِمُ السَّلَام) ने नमाज़ अदा फ़रमाई।

(معجم اوسط، 4/117، حدیث:5407)

एक और रिवायत में फ़रमाया : فِیْ مَسْجِدِ الْخَیْفِ قَبْرُ سَبْعِیْنَ نَبِیًّا या'नी मस्जिदे ख़ैफ़ में 70 अम्बिया (عَلَیْہِمُ السَّلَام) की क़ब्रें हैं। (معجم کبیر، 12/316، حدیث:13525)

अब इस मस्जिद शरीफ़ की काफ़ी तौसीअ़ हो चुकी है, मज़ारात की ज़ियारत नहीं हो सकती। ज़ाइरीने किराम को चाहिये कि बड़ी अ़क़ीदतो एह़तिराम से इस मस्जिद शरीफ़ की ज़ियारत करें, अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की ख़िदमतों में इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ करें : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَنْبِیَآءَ اللّٰہِ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ फिर ईसाले सवाब कर के दुआ मांगें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अपना तआ़रुफ़ करवा दिया (एक वाक़िआ़)

मक्कए पाक की प्यारी प्यारी गलियों, सड़कों से गुज़रते हुए अमीरे अहले सुन्नत ने एक बड़ा प्यारा मदनी फूल इर्शाद फ़रमाया : बा'ज़ अवक़ात ग़ुस्सा ह़माक़त (या'नी बे वुक़ूफ़ी) से शुरूअ़ हो कर नदामत तक ख़त्म होता है, मुझे एक वाक़िआ़ याद आया कि एक मश्हूर शख़्स पर किसी का पाउं पड़ गया तो वोह बद तमीज़ी करते हुए गालियां बकने लगा, ग़लती से पाउं रखने वाले शख़्स ने अपना तआ़रुफ़ करवाया कि "मैं फ़ुलां हूं" (या'नी वोह भी कोई शख़्सिय्यत था) तो जिस ने गाली दी थी वोह बड़ी शरमिन्दगी से कहने लगा : आप पहले मुझे बता देते मैं अपने ऊपर कन्ट्रोल कर लेता और इस त़रह़ बद अख़्लाक़ी से बात न करता तो पहले वाले शख़्स ने कहा : मैं अपना तआ़रुफ़ क्या करवाता, आप ने ख़ुद ही (बद अख़्लाक़ी का मुज़ाहरा कर के) अपना तआ़रुफ़ करवा दिया।

न बोलने का बोल देता है

ग़ुस्से में आदमी बिल्कुल बेक़ाबू हो जाता और बा'ज़ अवक़ात न बोलने की बातें बोल जाता है, ह़दीसे पाक में है : जहन्नम का एक दरवाज़ा है, जिस से

वोही लोग दाख़िल होंगे जिन का ग़ुस्सा **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी के बा'द ही ठन्डा होता है। (شعب الایمان، 6/320، حدیث: 8331)

अल्लाह पाक हमें सन्जीदगी अपनाने की तौफ़ीक़ दे और ग़ुस्से पर कन्ट्रोल नसीब करे कि जब भी ग़ुस्सा आए हमें उस पर कन्ट्रोल ही करना चाहिये, कहीं येह ग़ुस्सा हमें गुनाह में न डाल दे। अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ आदमी ! तू ग़ुस्से में ख़ूब उछलता है, कहीं अब की उछाल तुझे दोज़ख़ में न डाल दे। (احیاء العلوم، 3/205)

ऐ प्यारे भाई ! ग़ुस्से की आ़दत निकाल दे "ग़ुस्सा" कहीं न नार में तुझ को उछाल दे

अल्लाह पाक से हम जहन्नम के अ़ज़ाब और ग़ुस्से की तबाह कारियों से पनाह मांगते हैं। **अल्लाह** पाक हमें ह़िल्म व दर गुज़र से मालामाल कर के नरमी अ़ता करे। **अल्लाह** पाक मक्कए पाक की पाकीज़ा फ़ज़ाओं के सदक़े में हमें बे जा ग़ुस्से से बचा ले और हमें अम्न वाला बना दे, सलामती वाला बना दे, हम से लोगों को राह़त पहुंचे, हम से लोगों को तक्लीफ़ न पहुंचे।

اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मैदाने मुज़्दलिफ़ा और तमन्नाए अमीरे अहले सुन्नत

मैदाने "मुज़्दलिफ़ा" बड़े नसीब वाला मैदान है क्यूं कि इस मुबारक मैदान को प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वे नसीब हुए और क़दम चूमने की सआ़दत मिली है। यहां की फ़ज़ाओं ने मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ुल्फ़ों के ख़ूब

बोसे लिये होंगे, महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ूब नज़ारे किये होंगे। काश! काश! काश! इल्यास क़ादिरी इस मैदाने मुज़्दलिफ़ा का कोई ज़र्रा होता, इन्सान न होता।

मस्जिदे इजाबा[1]

इस वक़्त हम "**मस्जिदे इजाबा**" के साए में खड़े हैं। बताया जाता है येह वोही मस्जिद है जहां प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई थी।

क़बूलिय्यत का मक़ाम और फ़िलिस्तीन के आशिक़ाने रसूल के लिये दुआ

प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जहां (ज़ाहिरी ज़िन्दगी मुबारक में) तशरीफ़ लाना साबित है वहां दुआ क़बूल होती है। **या अल्लाह** पाक! हमारी और हर दा'वते इस्लामी वाले, वाली की बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** पाक! सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। ऐ **अल्लाह** पाक! येह क़बूलिय्यत का मक़ाम है, फ़िलिस्तीन के मज़्लूम मुसल्मानों की ग़ैब से मदद फ़रमा, इन पर रहमत की नज़र फ़रमा, ऐ **अल्लाह** पाक! इन को आज़्माइश से निकाल दे। ऐ **अल्लाह** पाक! जो इन में शहीद हुए बे हिसाब बख़्शे जाएं, जो बिछड़े हैं अपने प्यारों से मिल जाएं, जो ज़ख़्मी हैं वोह रू ब सिह्हत (या'नी तन्दुरुस्त) हो जाएं, जिन की अम्लाक (या'नी घर, दुकान, ज़मीनें, जायदादें वग़ैरा) तबाह हुई, **या अल्लाह** पाक! उन्हें ने'मल बदल (या'नी अच्छा बदला) अ़ता कर दे।

اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

रसूले पाक की दुख्यारी उम्मत पर इनायत कर
मरीज़ों, ग़मज़दों, आफ़त नसीबों पर करम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 99)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

1... मक्कए पाक और मदीनए पाक दोनों मुबारक शहरों में इस नाम से मस्जिद है।

राहे मदीना में ज़ियारत गाह

मदीनए पाक की जानिब सफ़र शुरूअ़ हुवा तो मदीना रोड पर "नवारिया" के क़रीब मक़ामे सरिफ़ पर तमाम मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का मज़ारे पुर अन्वार है, येह मज़ार शरीफ़ मक्कए मुकर्रमा से बाहर है। मदीने जाने वाली गाड़ी एक इस्लामी भाई की थी, अमीरे अहले सुन्नत ने गाड़ी से उतर कर ह़ज़रते बीबी मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ कर के दुआ़ मांगी। येह मज़ारे मुबारक सड़क के बीच में है। यहां चार दीवारी बना दी गई।

अहले इस्लाम की मादराने शफ़ीक़ बानुवाने त़हारत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

चलो मदीने चलते हैं

उ़म्रह शरीफ़ और ज़ियाराते मक्का के बा'द आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत अपने क़ाफ़िले के हमराह सूए मदीना रवाना हुए और बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में बड़े ही अदबो शौक़ के आ़लम में रोते रोते ह़ाज़िरी की सआ़दत पाई।

मदीनए पाक से जुदाई

आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत पर हिज्रे मदीना (या'नी मदीने से जुदाई) बहुत ही शाक़ (या'नी दुश्वार) होता है, अमीरे अहले सुन्नत फ़िराक़े रसूल व दियारे मक़्बूल में फूट फूट कर रोते हैं। बड़े बोझल क़दमों से वापसी के लिये

गाड़ी में बैठे और तक़रीबन सारा रस्ता "अल वदाअ़ **या रसूलल्लाह**" की सदाओं से हिचकियां बांधे रोते रहे। सच्चे आ़शिक़े रसूल की सोह़बत किसी ने'मते उ़ज़्मा से कम नहीं, इस सोह़बत से फ़ैज़ याफ़्ता नन्हा मुन्ना ह़सन रज़ा भी एरपोर्ट तक रोता रहा। अमीरे अहले सुन्नत जब अ़रब अमारात अपने घर पहुंचे तो उस वक़्त भी हिज्रो फ़िराक़े मदीना से दिल चूर चूर था और आप दीवार से लग कर रो रहे थे। अमीरे अहले सुन्नत की इस कैफ़िय्यत को शायद पन्जाबी शे'र में यूं बयान किया जा सके:

ओ कैसियां घड़ियां सन मेहमान सां सोहणे दे
दिल फ़ेर वी करदा ऐ त़यबा दा सफ़र होवे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

तह़रीराते अमीरे अहले सुन्नत

अमीरे अहले सुन्नत ने इस बार भी सफ़रे ह़रमैने त़य्यिबैन में और वापसी पर चन्द ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी के नाम तह़रीरात लिखीं। आ़शिक़े मक्का व मदीना, अमीरे अहले सुन्नत के क़लम के रंग, इ़श्क़े रसूल के संग पढ़ें। **अल्लाह** पाक नसीब करे तो यादे मक्का व मदीना में आंसू बहाइये।

یادِ سفرِ مدینہ
امارات ایئر پورٹ پر انتظار کے دوران کی ہوئی تحریر

اللہ

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

دعوتِ اسلامی زندہ باد (آمین)

(یعنی دعوتِ اسلامی سلامت رہے۔ آمین)

دعائے عطار

یا اللہ پاک! جو کوئی اپنے گھر، دکان، دفتر، گاڑی وغیرہ پر "دعوتِ اسلامی زندہ باد" لکھے اُس کو دنیا و آخرت میں سلامت رکھ اور اُس کی ماں باپ سمیت بے حساب مغفرت فرما۔

آمین بجاہ خاتم النبیین صلی اللہ علیہ والہ وسلم

यादे सफ़रे मदीना
(इमारात एरपोर्ट पर इन्तिज़ार के दौरान की हुई तह़रीर)

दा'वते इस्लामी ज़िन्दाबाद (आमीन)

(या'नी दा'वते इस्लामी सलामत रहे। आमीन)

दुआ़ए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई अपने घर, दुकान, दफ़्तर, गाड़ी वग़ैरा पर "दा'वते इस्लामी ज़िन्दाबाद" लिखे उस को दुन्या व आख़िरत में सलामत रख और उस की मां बाप समेत बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

www.dawateislami.net

اللہ

یادِ سفرِ مدینہ
(تحریر: امارات تا جدہ شریف دورانِ پرواز)

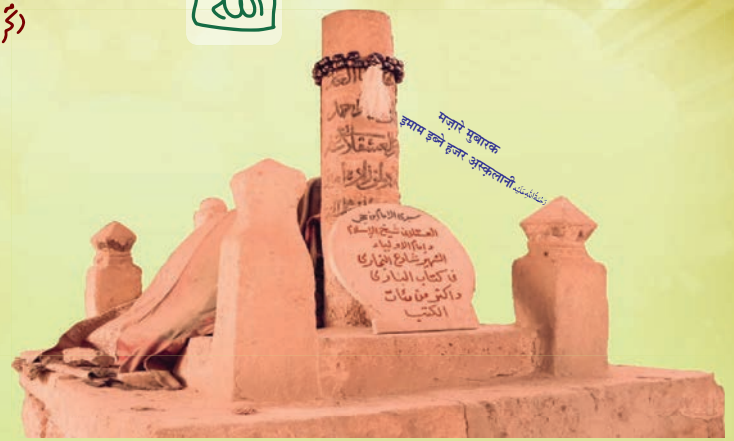

ارشادِ امام ابن حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ:

"اللہ پاک کی نافرمانیاں اکثر اوقات نعمتیں زائل (یعنی کم یا ختم) ہونے کا سبب بنتی ہیں۔"

(فتح الباری ج ۱۱ ص ۳۰۳)

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

यादे सफ़रे मदीना
(तह़रीर : इमारात ता जद्दा शरीफ़
दौराने परवाज़)

इर्शादे इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ **:**

“**अल्लाह** पाक की ना फ़रमानियां अक्सर अवक़ात ने’मतें ज़ाइल (या’नी कम या ख़त्म) होने का सबब बनती हैं।”

(تحریر: اماراتی تا جدّہ شریف دورانِ پرواز)
یادِ سفرِ مدینہ

اللہ

صحابی ابنِ صحابی حضرت عبد اللہ بن عبّاس رضی اللہ عنہما کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ آپ کے پاس جب کوئی مہمان حاضر ہوتا تو اس کو **آبِ زمزم** پیش کرتے اور جسے کھانا کھلاتے اُسے **آبِ زمزم** بھی پلاتے۔ (اَخبارِ مکّہ لِلفاکہی 2/46 رقم: ۱۱۱۸، ۱۱۱۷)

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہ علیٰ محمّد

محمد الیاس قادری
3-12-23

यादे सफ़रे मदीना
(तह़रीर : इमारात ता जद्दा शरीफ़ दौराने परवाज़)

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنۡہُمَا के बारे में कहा जाता है कि आप के पास जब कोई मेहमान ह़ाज़िर होता तो उस को **आबे ज़मज़म** पेश करते और जिसे खाना खिलाते उसे **आबे ज़मज़म** भी पिलाते।

www.dawateislami.net

مُعاف کرنے میں فائدہ ہے

حضرت امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

اللہ پاک تیری وجہ سے کسی مسلمان کو عذاب دے

اس میں تیرے لئے کوئی بھلائی نہیں۔

(یعنی مُعاف کردینے میں تیرا کیا جاتا ہے)

صلّوا علَی الحبیب صلَّی اللہُ علٰی محمّد

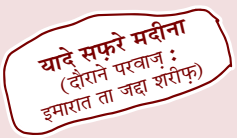

मुआ़फ़ करने में फ़ाएदा है

ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक तेरी वज्ह से किसी मुसल्मान को अ़ज़ाब दे इस में तेरे लिये कोई भलाई नहीं। (या'नी मुआ़फ़ कर देने में तेरा क्या जाता है)

यादे सफ़रे मदीना
(इमारात ता जद्दा शरीफ़ दौराने परवाज़ की तह़रीर)

یادِ سفرِ مدینہ
(امارات تا جدہ شریف دورانِ پرواز کی تحریر)

اللہ

دل کیلئے زیادہ فائدہ مند شے

حضرت محمد بن یونس رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:
''میں نے صالحین (یعنی نیک بندوں) کے ذکرِ خیر سے زیادہ فائدہ مند کوئی چیز دل کے لئے نہ دیکھی''۔ (صفۃ الصفوۃ ص ۱۸)

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

दिल के लिये ज़ियादा फ़ाएदे मन्द शै

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन यूनुस رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं :
“मैं ने सालिह़ीन (या’नी नेक बन्दों) के ज़िक्रे ख़ैर से ज़ियादा फ़ाएदे मन्द कोई चीज़ दिल के लिये न देखी।”

www.dawateislami.net

میری خواہش ہے کہ "سفرِ مدینہ" میں
"بات چیت کم سے کم" کروں۔
(تعاوُن کی درخواست ہے)

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

الحمد للہ الکریم ھمارا طیّارہ دورانِ تحریر
جدّہ شریف کے ایئرپورٹ پر اُتر چکا

मेरी ख़्वाहिश है कि "**सफ़रे मदीना**" में "**बातचीत कम से कम**" करूं।

(तआ़वुन की दरख़्वास्त है)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الْکَرِیْم हमारा त़य्यारा दौराने तह़रीर जद्दा शरीफ़ के एरपोर्ट पर उतर चुका

www.dawateislami.net

یادِ سفرِ مدینہ

تحریرِ حِل (جدہ شریف)

میرے لئے سب سے اچھا تحفہ ہے: "سلام" دینا

صحابیِ نبی حضرتِ ابو دَرداء رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں: "مجھے میرے کسی مسلمان بھائی نے ایسا تحفہ نہیں دیا جو **سلام** سے زیادہ مجھے پسند ہو"۔ (الزُّھد للامام احمد بن حنبل ص ۱۱۶ دار الکتب العلمیہ، بیروت)

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہ علی محمّد

यादे सफ़रे मदीना

(तह़रीरे ह़िल (जद्दा शरीफ़))

मेरे लिये सब से अच्छा तोह़फ़ा है : ''सलाम''

सह़ाबिये नबी ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : ''मुझे मेरे किसी मुसलमान भाई ने ऐसा तोह़फ़ा नहीं दिया जो **सलाम** से ज़ियादा मुझे पसन्द हो।''

www.dawateislami.net

یادِ سفرِ مدینہ
(تحریرِ حِل (جدّہ شریف))

اللہ

غم دُور ہوں اور عقل بڑھے

حضرتِ امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

جو اپنا لباس صاف رکھے اُس کے غم کم ہوجائیں گے
اور جو خوشبو لگائے اُس کی عقل بڑھے گی۔

(احیاء العلوم (اردو) ج ۵ ص 561)

صلوا علی الحبیب!
صلی اللہ علی محمد

यादे सफ़रे मदीना
(तह़रीरे ह़िल (जद्दा शरीफ़))

ग़म दूर हों और अ़क़्ल बढ़े

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं :
जो अपना लिबास साफ़ रखे उस के ग़म कम हो जाएंगे और जो ख़ुश्बू लगाए उस की अ़क़्ल बढ़ेगी।

www.dawateislami.net

یادِ مدینہ
تحریرِ مدینہ

اللہ

ایک فرمانِ آخری نبی صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم میں یہ بھی ہے:

”جس نے مدینہ کی تنگدستی اور سختی پر صبر کیا میں قیامت میں اُس کی شفاعت کروں گا یا اُس کے حق میں گواہی دوں گا۔“ (مجمع الزّوائد ج ۳ ص ۶۵۷، حدیث: ۵۸۱۹)

واہ! کیا بات ہے مدینے کی

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہ علیٰ محمّد

याद मदीना
तह़रीरे मदीना

एक फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में येह भी है :
‘‘जिस ने मदीने की तंगदस्ती और सख़्ती पर सब्र किया मैं क़ियामत में उस की शफ़ाअ़त करूंगा या उस के ह़क़ में गवाही दूंगा।’’

वाह ! क्या बात है मदीने की

ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا عرب کی ہے
خوب رحمت برستی رب کی ہے

یادِ راہِ مدینہ
تحریر: راہِ مدینہ

مکے کی گرمی کی فضیلت

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم:

"جو شخص دن کے کچھ وقت مکے کی گرمی پر صبر کرے جہنم کی آگ اس سے دور ہو جاتی ہے۔"

(الحمد للہ الکریم مکۂ پاک سے مدینۂ پاک ہماری گاڑی رواں دواں ہے)

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

यादे राहे मदीना
तह़रीर : राहे मदीना

ठन्डी ठन्डी हवा अ़रब की है
ख़ूब रह़मत बरसती रब की है

मक्के की गरमी की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

‘‘जो शख़्स दिन के कुछ वक़्त मक्के की गरमी पर सब्र करे जहन्नम की आग उस से दूर हो जाती है।’’

(اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم मक्कए पाक से मदीनए पाक हमारी गाड़ी रवां दवां है)

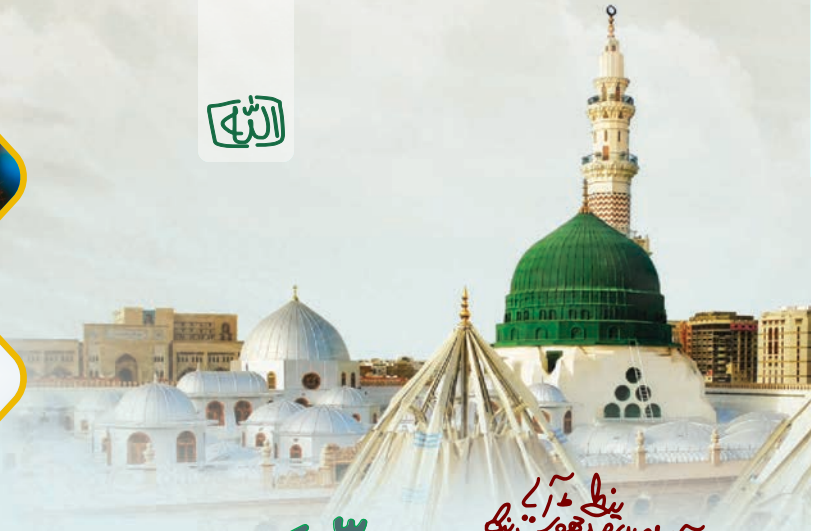

آہ! میں مدینہ چھوڑ آیا

سنّت کی فضیلت

فرمانِ آخری نبی صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

"جس نے میری سُنّت سے محبّت کی اُس نے مجھ سے محبّت کی اور جس نے مجھ سے محبّت کی وہ جنّت میں میرے ساتھ ہوگا۔" (ابنِ عساکر ج ۹ ص ۳۴۳)

صلّوا علی الحبیب صلّی اللہ علیٰ محمّد

आह ! मैं मदीना छोड़ आया

सुन्नत की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

"जिस ने मेरी **सुन्नत** से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।"

अल फ़िराक़ो वल फ़िराक़ ऐ प्यारे आक़ा अल फ़िराक़
फिर बुला लो जल्द आक़ाए मदीना अल वदाअ़

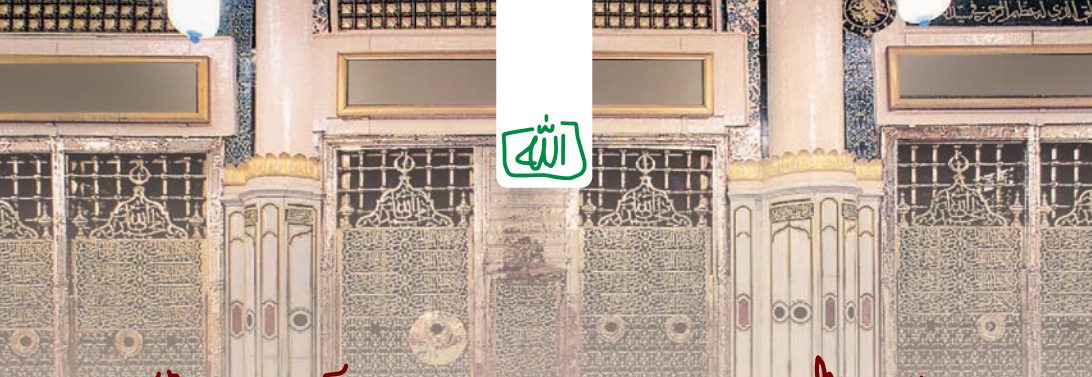

آہ! میں مدینہ چھوڑ آیا

آہ! فرقتِ مدینہ

دوسروں کے عیب مت ڈھونڈو

مسلمانوں کے دوسرے خلیفہ حضرت عمر فاروقِ اعظم رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں: ”دوسروں کے عیب ڈھونڈنے سے بچنے والے کو اپنے عیبوں کی اصلاح کی توفیق ملتی ہے۔“ (المُنَبِّہات)

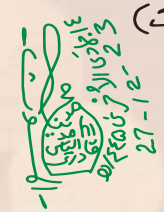

مکّے کی حسیں شام کی دیکھوں میں بہاریں
پھر دیکھوں مدینے کی شہا! صُبحِ دل آرا

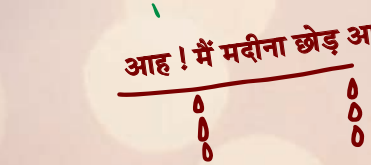

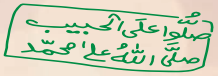

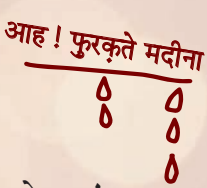

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

आह ! मैं मदीना छोड़ आया

आह ! फ़ुरक़ते मदीना

दूसरों के ऐब मत ढूंडो

मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : ''दूसरों के ऐ़ब ढूंडने से बचने वाले को अपने ऐ़बों की इस्लाह़ की तौफ़ीक़ मिलती है।''

मक्के की ह़सीं शाम की देखूं मैं बहारें
फिर देखूं मदीने की शहा ! सुब्ह़े दिलआरा

ह़फ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ/ ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अलह़ाज अबू उसैद उ़बैद रज़ा मदनी مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی की जानिब से हर हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الْکَرِیْم ! लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या सुन कर अमीरे अहले सुन्नत/ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत की दुआ़ओं से ह़िस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से ख़ुद भी पढ़ें और अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।

(शो'बा : हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)